पूर्व बस्तर माटी के लाल, जनयुद्ध के जांबाज योद्धा

कामरेड धर्मु को लाल लाल सलाम

अप्रैल 22, 2015 को कोंडागांव जिले के मटवाल गांव में मंडई के दिन पुलिस द्वारा नजदीक से की गयी गोलीबारी में कॉमरेड धर्मु घायल हुआ था। घायल अवस्था में उसे पकड़कर गंभीर यातनाएं देकर उसकी जघन्य हत्या की गयी। कॉमरेड धर्मु के मुंह से राज की एक बात क्या एक शब्द भी पुलिस उगलवा न सकी। शोषक–शासक वर्गों की सेवा करने वाली पुलिस एवं जनता के गद्दारों ने कॉमरेड धर्मु के बारे में मुखबिर से सूचना प्राप्तकर उसे घेरकर फर्जी मुठभेड़ में उसकी हत्या की। जनता व जनयुद्ध की सेवा में उसने अपनी जान देकर शहादत को पाया। कॉमरेड धर्मु ने अपना दिमाग, शरीर, ताकत व समय सब कुछ जनता के लिए खर्च किया था। क्रांतिकारी जनयुद्ध की राह में अपने खून से हस्ताक्षर करके हमारी आंखों के सामने से ओझल हो गया है।

कामरेड धर्मु का जन्म, बचपन व जनयुद्ध के साथ कदमताल

पूर्व बस्तर डिविजन के वयानार इलाके के टेमुरूगांव के गरीब यादव किसान परिवार में 23–24 साल पहले कॉमरेड धर्मु ने जन्म लिया। उसकी मां का नाम सुकाई और बाप का नाम बिश्राम है। कॉमरेड धर्मु अपने पीछे मां–बाप, दो बडी बहनों, दो छोटी बहनों व एक छोटे भाई को छोड गया है। गांव की ही प्राथमिक शाला में उसने चौथी कक्षा तक की पढ़ाई की। बचपन से ही गुरिल्ला दस्ते का गांव में आना–जाना देखता था। नाच व गीत देख, सुन यह समझ गया था कि लुटेरी वर्गों को खत्म करके जनता की राजसत्ता कायम करना बंदूक द्वारा ही संभव है। इसी सोच, समझ के साथ वह पार्टी में भर्ती हुआ। वर्ग नफरत व जिद् के साथ संघर्ष में डटा रहा। कंधे पर बंदूक के साथ ही क्रांतिकारी राजनीति सीखी।

शहीद–ए– आजम भगत सिंह जो अंग्रेजों के खिलाफ लड़ते हुए, छोटी उम्र में ही इंकलाब जिंदाबाद का नारा लगाते हुए फांसी पर झूल गये थे, कॉमरेड धर्मु के लिए प्रेरणा स्रोत व आदर्श नमूना थे। जुलाई, 2007 में पार्टी में भर्ती होनेवाले कॉमरेड धर्मु ने अपने आदर्श भगत सिंह की राह पर आखिरी दम तक काम किया और 23–24 साल की छोटी उम्र में ही जनता के लिए जान कुरबान की।

पार्टी में काम

कॉमरेड धर्मु को दूसरे नवजवान साथियों के साथ पहले टेलर टीम में रखा गया था। कुछ दिन बाद एरिया में घूमने की उसकी मांग पर पार्टी ने उसे 18 पीएल में रखा था। प्रारंभ से ही कॉमरेड धर्मु की सैनिक कार्रवाइयों में जबर्दस्त रुचि थी। सैनिक कार्रवाइयों में उसकी रुचि एवं हिम्मत को देखते हुए पार्टी ने उसे दिसंबर, 2008 में पूर्व बस्तर डिविजन में गठित 6 वीं कंपनी में नियुक्त किया था। कॉमरेड धर्मु जैसे–जैसे बढ़ता गया उसकी शक्ति, चेतना, हिम्मत बढ़ता गया। पार्टी द्वारा संचालित बुनियादी साम्यवादी प्रशिक्षण शाला की पहली बैच के लिए जब कॉमरेड धर्मु का पार्टी ने चयन किया, वह खुशी से स्कूल में दाखिला लिया। वहां उसने पूरे लगन के साथ अध्ययन किया। प्रशिक्षण पूरा होने के बाद उसे सांगठनिक काम में भेज दिया गया था। कुछ समय बाद उसकी मांग व मिलिटरी क्षेत्र में काम करने की उसकी दिली तमन्ना देखकर पार्टी ने उसे फिर से कंपनी–6 में भेजा। जनवरी, 2010 से लेकर अपनी शहादत तक कॉमरेड धर्मु कंपनी–6 का विश्वसनीय, साहसी योद्धा बनकर काम किया। कंपनी में काम करते हुए ही कॉमरेड धर्मु ने पार्टी द्वारा सौंपे गये दूसरे महत्वपूर्ण कार्य को बखूबी निभाया था। चार साल तक उसने बहुत ही गोपनीय तरीके से उक्त कार्य को अंजाम दिया। कॉमरेड धर्मु सभी प्रकार की सैनिक कार्रवाइयों जैसे एक्शन टीम, रेक्की टीम, स्काउट, सिविल एंबुश, एंबुश में जोशो–खरोश के साथ भाग लेता था। कोंगेरा एंबुश जिसमे सीआरपीएफ के 26 जवान मारे गये, सुलेंगा एंबुश, झारा फ्रंटल अटैक, ऑपरेशन अम्मोनियम (अम्मोनियम नाइट्रेट जब्त करने की कार्रवाई), टेडुम हमला जिसमें एसटीएफ के कंपनी कमांडर सहित पुलिस के दो जवान मारे गये थे, में कॉमरेड धर्मु बढ़–चढ़कर भाग लिया था। कॉमरेड धर्मु को उसकी क्षमताओं, उसके काम व राजनीतिक प्रतिबद्धता को देखते हुए मई, 2014 में पीपीसीएम की पदोन्नति दी गयी थी। छोटी उम्र के दुबले–पतले नवजवान कॉमरेड धर्मु में अचंभित कर देने वाली ताकत, ऊर्जा, हिम्मत थी। नवंबर, 2014 में एक स्थानीय बाजार निहत्थे कॉमरेड धर्मु को एक गद्दार ने जब पीछे से जकड़ा था तब उसने साहस व सूझ–बूझ के साथ बगैर हथियार की युद्धकला का इस्तेमाल करते हुए उसे जकड़ने वाले गद्दार पर प्रहार करके उसके चंगुल से बच निकला था। पहलकदमी व सृजनात्मक ढ़ंग से काम करते हुए कॉमरेड धर्मु पार्टी कार्यों को कुशलतापूर्वक सफल करता था।

कॉमरेड धर्मु का व्यवहार

कॉमरेड धर्मु हंसमुख था। हंसता, हंसाता था। साथियों के साथ राजनीतिक विषयों पर चर्चा करता था। चर्चा ही नहीं, उन विषयों को हमारे व्यवहार के साथ जोडकर सोच–विचार करता था। मार्क्सवाद–लेनिनवाद–माओवाद के अध्ययन में रुचि रखता था। अपने विचारों को स्पष्ट रूप से सामने लाता था। उसके हर काम में बोल्शेविक स्फूर्ति स्पष्ट नजर आती थी। सर्वहारा वर्ग के सोच–विचार व व्यवहार को विकसित करने पर ध्यान देता था। काम के दौरान कॉमरेड धर्मु जनता के साथ बहुत जल्दी घनिष्ट संबंध बना लेता था। हल्के परिचय को मजबूत संबंध में बदलने में वह माहिर था। उसके साथ एकबार जो मिला, कभी उसे भूल नहीं सकता है, ऐसा अमिट छाप छोडता था। वर्ग दुश्मनों से जितनी नफरत करता था, उससे कई गुना ज्यादा अपने साथियों व वर्ग मित्रों से प्यार करता था। बीमार व घायल साथियों का विशेष ख्याल रखता था। पार्टी अनुशासन का पालन करता था। अपनी गलतियों को खुलकर बताता था। स्पष्ट रूप से आत्मालोचना करता था। छुपाने की कोशिश बिल्कुल नहीं करता था। नेतृत्व हो या साथी कॉमरेड, वास्तविकता पर आधारित होकर आलोचना करने में हिचकिचाता नहीं था। आत्मसमर्पण से कॉमरेड धर्मु तीखा नफरत करता था। दुश्मन की दिवालिया आत्मसमर्पण नीति के लालच में पार्टी के कुछ कमजोर लोगों के आत्मसमर्पण को कॉमरेड धर्मु गद्दारी करार देता था। दूध पिलाकर बढा करने वाली मां की हत्या के बराबर समझता था। इसी विश्वास के साथ कॉमरेड धर्मु आखिरी सांस तक जन सेवक बनकर काम किया और हमारे लिए एक आदर्श नमूना प्रस्तुत किया। कठिन परिस्थिति में कॉमरेड धर्मु दृढ़ संकल्प के साथ आन्दोलन में डटा रहा। कंपनी–6 के कमांडर ने ही जब राजनीतिक व नैतिक रूप से पतित होकर दुश्मन के सामने घुटने टेक दिया था तब भी कॉमरेड धर्मु ने मजबूती का परिचय दिया और कंपनी के मनोबल को कायम रखने में अपनी जिम्मेदारी को बखूबी निभाया। शहादत के कुछ दिन पहले ही कॉमरेड धर्मु जब घर देखने गया था, उसकी मां ने उसे चेताया था कि गद्दार लोग उसे मारने की योजना बना रहे हैं, इसलिए वह सतर्क रहे। इस पर उसने अपनी मां से कहा कि इस निर्मम वर्ग संघर्ष में कोई भी किसी को मार सकता है, दुश्मन हमें या हम दुश्मन को। इसलिए यदि आस–पास में कहीं उसकी मौत होगी तो उसकी लाश को गांव–घर में लाया जाए।

शोषक वर्ग की हार व जनता की जीत निश्चित है

गांव के एक साधारण किसान परिवार में जन्म लेनेवाला कॉमरेड धर्मु एक साहसिक गुरिल्ला कमांडर बनकर अपने जीवन सफर को एक आदर्श नमूने के रूप में प्रस्तुत किया। दीर्घकालीन जनयुद्ध के रास्ते क्रांति के सफल होने तक पीछे मुडकर न देखने की जिद के साथ उसने काम किया। कॉमरेड धर्मु इस ऐतिहासिक सच्चाई से भली–भांति वाकिफ था कि बलिदान के बगैर जीत हासिल नहीं हो सकती है। इसीलिए वह बलिदान की भावना के साथ युद्ध कार्रवाइयों में शामिल होता था। कॉमरेड धर्मु की शहादत, हमारे हजारों वीर योद्धाओं की शहादत के साथ ही जनयुद्ध के इतिहास में हमेशा के लिए अंकित रहेगा। शोषक–शासक वर्ग और शोषित–शासित वर्ग के बीच जारी वर्गयुद्ध में पीडित जनता तमाम मुश्किलों का सामना करती हुई आखिरी जीत की ओर आगे बढ़ेगी। इस दौरान हार, जीत, हार आखिर में जनता की ही जीत होगी। इस ऐतिहासिक सच्चाई पर पूर्ण विश्वास रखकर कॉमरेड धर्मु ने जनयुद्ध में अपनी जान की बाजी लगायी थी।

कॉमरेड धर्मु के अधूरे आशय को पूरा करेंगे

कॉमरेड धर्मु नवजवान था। क्रांति के लिए जान देकर उसने नवजवानों के सामने उच्च आदर्श प्रस्तुत किया। इस देश के नवजवानों को स्वयं के लिए नहीं बल्कि देश की उत्पीड़ित जनता की मुक्ति के लिए जीने व मरने का उदाहरण पेश करने वाले अमर शहीदों के बाजू में खड़ा होकर छोटी उम्र में ही कॉमरेड धर्मु संघर्ष इलाकों की नवजवान पीढ़ी के सामने आदर्श नमूना बन गया है। कॉमरेड धर्मु की शहादत हमारे लिए बडा नुकसान है। एक उदीयमान कामरेड को हमने खोया। हमारे बीच में अब सिर्फ उसका काम है, उसका आदर्श है, उसका बलिदान है, उसका सपना है। एक हाथ से आंसू पोंछते हुए दूसरे हाथ से लाल झंडे को ऊंचा उठाकर उसके अधूरे आशय को पूरा करने आखिरी दम तक जनयुद्ध में डटे रहना ही कॉमरेड धर्मु को दी जाने वाली सच्ची श्रद्धांजलि होगी। कॉमरेड धर्मु के अंतिम संस्कार में शामिल जनता, पीएलजीए ने गगनचुंबी नारों के साथ, उसकी बोल्शेविक स्फूर्ति को अपनाने व उसके सपने को साकार करने का शपथ लिया।

- **कॉमरेड धर्मु अमर रहे!**
- **कॉमरेड धर्मु की फर्जी मुठभेड़ का बदला लेंगे!**
- **जनयुद्ध को तेज करेंगे! ऑपरेशन ग्रीनहंट को हरायेंगे!**
- **गद्दारों को मौत की सजा देंगे!**

पूर्व बस्तर डिविजनल कमेटी,
भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी)